

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of Al-Bur Razaq Educational Society)

ADMISSION OPEN

COLLEGE OF NURSING
2 YEARS
M.Sc. Nursing
Post Basic B. Sc. Nursing
B.Sc. Nursing
GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS
ANM (Auxiliary Nursing And Midwifery)

COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS
BMLT
DMLT
OT ASSISTANT
ECG
OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS
CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS
RADIO-IMAGING
2 YEARS
ANESTHESIA TECH.
1 YEARS
DRESSERS

COLLEGE OF PHARMACY
2 YEARS
D-PHARM
B-PHRRM
Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

SMD TRADERS
कठहल मोड़ चौक
पटाखा गली, श्रीराम नगर
गुटवा, थाना - नगरी, राँची



हम मुर्गा छाप एवं अन्य ब्राण्डेड कपनियों के पटाखे अन्यों से 10% कम भाव में थोक एवं खुदरा विक्रेता

जाओ मम्मी - पापा जाओ एसएमडी के पटाखे लाओ क्यों ?इसलिए ! मम्मी पापा से कहते है बच्चे एसएमडी के पटाखे अच्छे

संपर्क करें :

6201474385
7488680098
9717720847

न्यूज रीलस

विदेश सचिव ने संसदीय समिति को ब्रीफिंग की
नयी दिल्ली। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने सोमवार को भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष पर संसदीय समिति को ब्रीफ किया। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के तहत एयरस्ट्राइक और 10 मई को हुए भारत-पाकिस्तान सीजफायर सहमति की पूरी जानकारी दी। बैठक में कांग्रेस सांसद शशि थरूर, तुषमूल कांग्रेस के अभिषेक बनर्जी, कांग्रेस के राजीव शुक्ला और दीपेंद्र हुड्डा, एआइएमआइएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी और भाजपा की अपराजिता सारंगी व अरुण गोविल आदि मौजूद रहे।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में 42 जिंदा बम नष्ट
जम्मू-कश्मीर। आर्मी ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास 42 जिंदा बम नष्ट किये। ये सभी सीमा पार से हुई फ्रंटियरिंग के दौरान भारतीय सीमा में गिरे थे। रक्षा प्रवक्ता ने बताया कि ये शेल्व्स बॉर्डर से सटे इलाकों झुल्लास, सलोजी, धाराती और सालानी इलाकों से मिले थे।

सेना ने किया खुलासा : दिखाये सबूत और डेमो पाकिस्तान ने स्वर्ण मंदिर पर भी दागे थे ड्रोन और मिसाइल

आकाश मिसाइल प्रणाली बनी ढाल

अमृतसर। पाकिस्तान ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर को भी निशाना बनाने के लिए मिसाइलें और ड्रोन दागे थे। इसे भारतीय रक्षा प्रणालियों ने ध्वस्त कर दिया था। इसे लेकर सेना ने एक डेमो भी जारी किया। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारतीय सेना ने एक और नया वीडियो जारी किया। इसमें सेना ने दिखाया कि पाकिस्तान की तरफ से दागे गये ड्रोन और मिसाइलों को कैसे मार गिराया। वेक्टरन कमांड ने वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि हमने जमीन से आसमान की रक्षा की। सेना ने पंजाब में मार गिराये गये पाकिस्तानी ड्रोन और मिसाइल के मलबे भी दिखाये।

हमले की खुफिया जानकारी मिली थी: 15 इन्फैंट्री डिवीजन के जीओसी मेजर जनरल कार्तिक सी शेषाद्रि ने कहा कि 7 मई की रात को हमें पुछ्छा जानकारी मिली थी कि पाकिस्तान किसी उचित और सटीक टारगेट न होने के कारण सिविल ठिकानों, खासतौर पर धार्मिक स्थलों को निशाना बनायेगा। इसमें अमृतसर में स्थित स्वर्ण मंदिर सबसे अहम था। हमें अतिरिक्त जानकारी यह भी मिली कि वे (पाकिस्तान) स्वर्ण मंदिर पर भारी तादाद में ड्रोन और मिसाइल से हमला करेंगे, इसलिए



पंजाब में मार गिराये गये पाकिस्तानी ड्रोन और मिसाइल का मलबा दिखाते सेना के जवान।

ऑपरेशन सिंदूर अभी बाकी है, केवल रोका गया: मेजर जनरल शेषाद्रि

अमृतसर (आजाद सिपाही)। 15 इन्फैंट्री डिवीजन के जनरल ऑफिसर कमांडिंग मेजर जनरल कार्तिक सी शेषाद्रि ने सोमवार को पाकिस्तान को सख्त चेतावनी दी। उन्होंने पड़ोसी देश से किसी भी तरह के दुस्साहस से बचने का आग्रह किया और अगर उनकी ओर से कोई दुस्साहस हुआ तो जवाब कड़ा होगा। उन्होंने कहा कि याद रहे ऑपरेशन सिंदूर केवल स्थगित किया गया है, यह खत्म नहीं हुआ। उसका विकशल रूप अभी बाकी है। अगर हालात बिगड़े तो भारत पाकिस्तान को कड़ा और माकूल जवाब देगा। भारत की सैन्य क्षमताएं सैन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हैं। मेजर जनरल शेषाद्रि ने कहा कि भारतीय सशस्त्र बल पाकिस्तानी सेना की कमियों से अच्छी तरह वाकिफ हैं। अगर पाकिस्तानी सेना कोई दुस्साहस करने की कोशिश करती है, तो वह अपने आप को पूरी तरह से खतरे में डाल देगी। आधुनिक हथियारों और बेहतर लड़ाकू क्षमताओं के साथ हम अगली बार उसे विनाशकारी जवाब देंगे। अगर जरूरत पड़ी तो दुश्मनों का खात्मा सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना की वायु रक्षा प्रणालियों ने पाकिस्तान के दुस्साहस को विफल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

हमने तुरंत आधुनिक अतिरिक्त एवं उपयुक्त एयर डिफेंस उपलब्ध कराया था। हमने स्वर्ण मंदिर पर एक आंच भी नहीं आने दी।

भारतीय सेना ने सोमवार को एक डेमो दिखाया। इसमें बताया गया कि कैसे आकाश मिसाइल प्रणाली सहित भारतीय वायु रक्षा प्रणालियों

मिसाइलें सीधे स्वर्ण मंदिर पर दागी गयीं

भारतीय रक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता पर एक अन्य सैनिक ने कहा कि जमीन आधारित वायु रक्षा हथियारों और सेना के वायु रक्षा हथियारों के गोला-बारूद का केवल 10% ही इस्तेमाल किया गया। हमने आइएचए-3 और सोंगार जैसे कमिकेज ड्रोन और माइक्रो-ड्रोन बरामद किये हैं, जो संभवतः तुर्की मूल के हैं। हमारी वायु रक्षा दीवार को भेदना बहुत मुश्किल है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान यह अनुमान लगाया गया था कि पाकिस्तान हमारे मुख्य हवाई ठिकानों और सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनायेगा। आश्चर्य की बात यह रही कि कुछ कमिकेज ड्रोन, सतह से सतह और हवा से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें सीधे स्वर्ण मंदिर पर दागी गयीं। सभी हवाई हमलों को रोक दिया गया और बड़ी सटीकता के साथ मार गिराया गया।

ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर और पंजाब के शहरों को पाकिस्तानी मिसाइल और ड्रोन हमलों से बचाया। उन्होंने डेमो दिखाते हुए बताया कि कैसे आकाश मिसाइल प्रणाली, एल-70 एयर डिफेंस गन सहित भारतीय वायु रक्षा प्रणालियों ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर और पंजाब के शहरों को पाकिस्तानी मिसाइल और ड्रोन हमलों से बचाया।

मुख्यमंत्री से अजय नाथ शाहदेव और उनकी टीम ने की मुलाकात



हेमंत सोरेन ने दी बधाई, क्रिकेट को नयी ऊंचाई देने पर हुई चर्चा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (जेएससीए) की नवनिर्वाचित टीम ने सोमवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से उनके आवासीय कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की। प्रतिनिधिमंडल में अध्यक्ष अजयनाथ शाहदेव, उपाध्यक्ष संजय पांडेय, सचिव व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर सौरभ

तिवारी, कोषाध्यक्ष अमिताभ घोष, मैनेजिंग कमेटी के सदस्य मिहिर प्रियेश टोप्पो, रमेश कुमार, संजय जैन, रमेश कुमार सिंह और जिला प्रतिनिधि श्रीराम पुरी व उत्तम कुमार शामिल रहे। टीम ने मुख्यमंत्री को हाल में संपन्न जेएससीए चुनाव से जुड़ी विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सभी निर्वाचित सदस्यों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए विश्वास जताया कि नयी कमेटी अपनी ऊर्जा और क्षमता के साथ राज्य में क्रिकेट को नयी दिशा देगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में

क्रिकेट प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, और जेएससीए की नयी टीम के नेतृत्व में इन प्रतिभाओं को तराशने का काम और प्रभावी तरीके से होगा। उन्होंने खेलाड़ियों के विकास और क्रिकेट इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार में सरकार के पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया। इस मुलाकात को क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक सकारात्मक संकेत माना जा रहा है, जहां प्रशासन और क्रिकेट संस्था मिलकर राज्य में खेल संस्कृति को और समृद्ध करने की दिशा में आगे बढ़ने को तत्पर हैं।

कांके में दिनदहाड़े घर में घुस कर युवक की हत्या



अपराधियों ने मारे चाकू, रिम्स में इलाज के दौरान हुई मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। कांके डैम इलाके में उस वक्त सनसनी फैल गयी, जब मुंडन कार्यक्रम के दौरान कुछ अज्ञात अपराधी एक घर में घुस गये और रमेश उरांव (35) नामक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी। इस घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल है। आक्रोशित ग्रामीणों ने कांके रोड को जाम कर जमकर प्रदर्शन किया।

लोगों को समझाने में जुटी पुलिस

घटना की सूचना मिलते ही कांके और गोंदा थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस पदाधिकारियों ने ग्रामीणों को शांत करने की कोशिश की, लेकिन लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। आक्रोशित लोगों ने कांके रोड पर सड़क जाम कर दी। ग्रामीणों की मांग थी कि हत्यारों की जल्द गिरफ्तारी हो और मृतक के परिवार को मुआवजा मिले। बाद में पुलिस ने जाम हटा दिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। हत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन आपसी रंजिश या पुरानी दुश्मनी को लेकर शक जताया जा रहा है।

जानकारी के मुताबिक कांके डैम क्षेत्र स्थित एक घर में मुंडन का कार्यक्रम चल रहा था। उसी दौरान कुछ लोग अचानक घर में घुस गये और रमेश उरांव पर ताबड़तोड़ चाकू से हमला कर

दिया। परिजनों ने आनन-फानन में घायल रमेश को रिम्स अस्पताल पहुंचाया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। बताया जा रहा है कि रमेश जमीन का कारोबार करता था।

भारत धर्मशाला नहीं है, जो सबको शरण दे : सुप्रीम कोर्ट

- श्रीलंकाई नागरिक की याचिका खारिज
- भारत छोड़ने के आदेश को दी थी चुनौती

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने श्रीलंकाई शरणार्थी से जुड़े एक मामले में सोमवार को कहा कि भारत कोई धर्मशाला नहीं है। दुनियाभर से आये शरणार्थियों को भारत में शरण क्यों दें? हम 140 करोड़ लोगों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। हम हर जगह से आये शरणार्थियों को शरण नहीं दे सकते।

जस्टिस दीपाकर दत्ता और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की बेंच ने यह टिप्पणी श्रीलंकाई तमिल नागरिक की शरण याचिका खारिज करते हुए की। दरअसल, मद्रास हाइकोर्ट ने श्रीलंकाई नागरिक को यूएपीए मामले में सात साल की सजा पूरी होते ही तुरंत भारत छोड़ देने का आदेश दिया था। इसके खिलाफ उसने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायिल कर हस्तक्षेप करने की मांग की थी। याचिकाकर्ता की तरफ से आर सुधाकरन, एस प्रभु रामसुब्रह्मण्यम और वैरावन एएस ने कोर्ट में दलील दी।

बताते चलें कि यह केस एक

श्रीलंकाई तमिल नागरिक का है, जिसे 2015 में लिबेरेशन टाइगर ऑफ तमिल ईलम (एलटीटीई) से जुड़े होने के शक में तमिलनाडु पुलिस की द ब्रांच ने दो अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार किया था। एलटीटीई पहले श्रीलंका में सक्रिय एक आतंकी संगठन था। 2018 में एक निचली अदालत ने याचिकाकर्ता को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के तहत दस साल की सजा सुनायी थी। 2022 में मद्रास हाइकोर्ट ने सजा को सात साल कर दिया और कहा कि सजा पूरी होने के बाद उसे देश छोड़ना होगा।

मुरादाबाद और नूह से पाकिस्तान के लिए जासूसी करनेवाले दो गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

मुरादाबाद/नूह। उत्तर प्रदेश के मुदाबाद और हरियाणा के नूह से दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। ये पाकिस्तान के लिए जासूसी करते थे। भारत की खुफिया जानकारी मुहैया कराते थे। उत्तर प्रदेश की एंटी टेररिस्ट स्क्वाड (एटीएस) ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में शहजाद नाम के युवक को मुरादाबाद से गिरफ्तार किया है। शहजाद तस्कर की आड़ में वह आइएसआइ के लिए जासूसी गतिविधियां चला रहा था। जांच में पता चला कि शहजाद के आइएसआइ के एजेंटों से गहरे

संबंध थे और वह भारत की गोपनीय सुरक्षा जानकारी उन तक पहुंचाता था। उधर, हरियाणा पुलिस और

केंद्रीय जांच एजेंसियों ने नूह जिले के गांव कांगरका से तारीफ पुत्र हनीफ को गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी दो दिन पहले राजका गांव

से अरमान की जासूसी के आरोप में हुई गिरफ्तारी के बाद हुई है। तारीफ पर आरोप है कि वह भारतीय सैन्य गतिविधियों से जुड़ी गोपनीय जानकारी दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्च आयोग में तैनात दो कर्मचारियों को उपलब्ध करा रहा था।

BABU DINESH SINGH UNIVERSITY
(Established Under Government of Jharkhand Act-06, 2023 & Section 2(f) of the UGC Act, 1956, Member of AIU, Delhi)

Admission Open 2025-26

Approved by BCI

LL.B. (3 Years)	B.A. LL.B. (Honours) (5 Years)	B.B.A. LL.B. (Honours) (5 Years)
---------------------------	---	---

Special Features -

- Traditional and e-Library
- Highly Qualified Faculty
- Legal Research Cell
- Scholarships for Boys & Girls
- 24 Hours of Academic Excellence
- Practical court craft & moot court
- 100+ Acre Green Campus

Programs Approved by AICTE & Apex Bodies

BCA	MCA	BBA	MBA
------------	------------	------------	------------

B.TECH	CSE CSE(AI) CEE EEE CSE(CYBER SECURITY) B.Com. & E-Learning	DIPLOMA	CSE EEE CE ME EEE B.Com. & E-Learning
---------------	---	----------------	---

Others Job Oriented Courses

B.D.S.	B.H.M.S.	B.Sc. Nursing	GNM	ANM
B.Sc. (Medical)	B.Sc. (MLT)	M.Sc. (MLT)	B.Ed.	I.D.El.Ed
M.D.	M.D.S.	M.Sc. (Medical)	PARAMEDICAL	B.A.
B.Sc.	B.Com.	I.M.A.	M.Sc.	I.M.Com.
I.B.Sc. (Agriculture)	I.B.Pharm	D.Pharm	B.Lib.I.Sc.	M.Lib.I.Sc.
ITI				

BDSU : PARATHIVA, GARHWAR-822114, JHARKHAND
📞 9661462506, 6206297213, 9934688493
For More Details Visit : 🌐 bdsu.ac.in Email : bdsugarhwa@gmail.com

पाकिस्तान-चीन-बांग्लादेश मिल कर बना रहे आतंक की नयी फैक्ट्री

■ भारत को सतर्क रहने की जरूरत, धार्मिक कट्टरपंथ को बढ़ावा देने की रच रहे साजिश

■ भारत को अब अपनी पूर्वोत्तर सीमा पर बांग्लादेश से भी सतर्क रहना जरूरी

■ उधर तुर्किए और अजरबैजान पर भी दृष्टि रखने की जरूरत, तोड़नी होगी रीढ़

आतंक के खिलाफ भारत के ‘ऑपरेशन सिंदूर’ की सफलता के बाद दक्षिण एशिया का कूटनीतिक परिदृश्य बदल गया है। पाकिस्तान और चीन की दोस्ती ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के दौरान सामने आयी, तो इसके बाद अब भारत के ये दोनों दुश्मन देश बांग्लादेश की मदद से धार्मिक कट्टरवाद को बढ़ावा देकर भारत के लिए परेशानी पैदा करने की कोशिश में जुट गये हैं। आतंक का यह त्रिकोण भारत के लिए नया टेंशन पैदा कर रहा है, जिस पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के बाद से अचानक बांग्लादेश का रुख बदलता हुआ नजर आ रहा है



राकेश सिंह

‘ऑपरेशन सिंदूर’ की सफलता और वैश्विक कूटनीति में भारत के दबदबे के बावजूद भारत की परेशानी कम होने का नाम नहीं ले रही है। ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के दौरान पाकिस्तान-चीन गठजोड़ को धूल चटाने के बाद भारत के लिए एक नया टेंशन पैदा होने लगा है और यह है धार्मिक कट्टरपंथ और आतंक का त्रिकोण, जिसमें पाकिस्तान और चीन के साथ बांग्लादेश शामिल हो गया है। भारत ने 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता में अहम भूमिका निभायी थी। उस समय बांग्लादेश के मुक्ति योद्धाओं ने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में शरण ली और वहाँ से पाकिस्तान के खिलाफ अपना स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। स्वाभाविक रूप से बांग्लादेश के लोगों को पूर्वोत्तर भारत के लोगों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होंने कठिन समय में उनकी मदद की। लेकिन समय के साथ स्थिति उलटी होती चली गयी और आज पूर्वोत्तर

भारत को बांग्लादेश से उत्पन्न कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। हाल ही में बांग्लादेश के एक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी मेजर जनरल एएलएम फजलुर रहमान ने विवादस्पद बयान देते हुए कहा कि अगर भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया, तो बांग्लादेश को भारत के सभी पूर्वोत्तर राज्यों पर कब्जा कर लेना चाहिए। यह बयान तब आया, जब 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 हिंदुओं की मौत हो गयी और भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था। फजलुर रहमान पूर्व में बांग्लादेश राइफलस (अब बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश) के प्रमुख रह चुके हैं और दिसंबर, 2024 में मोहम्मद युनुस की अंतरिम सरकार द्वारा 2009 के बांग्लादेश राइफलस विद्रोह की जांच के लिए गठित राष्ट्रीय स्वतंत्र आयोग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उनके इस बयान पर बांग्लादेश सरकार ने सफाई देते हुए कहा कि ये उनके निजी विचार हैं और सरकार का इससे कोई लेना-देना नहीं है। विदेश मंत्रालय ने साफ कहा कि बांग्लादेश संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, आपसी सम्मान और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का पालन करता है। हालाँकि, यह पहली बार नहीं है, जब बांग्लादेश की ओर से पूर्वोत्तर भारत की लेकर असंवेदनशील और विस्तारवादी संकेत मिले हों। बांग्लादेश का

और कूटनीति के जानकार बताते हैं कि मोहम्मद युनुस इन दिनों पाकिस्तान और चीन के साथ नजदीकी बढ़ाने में जुटे हुए हैं। यह सभी जानते हैं कि शेख हसीना के बांग्लादेश की सत्ता से हटने के बाद से ही बांग्लादेश-भारत के संबंध बहुत सहज नहीं रहे हैं। रणनीतिक रूप से बांग्लादेश का महत्व इसलिए अधिक है, क्योंकि भारत के उत्तर-

आजाद सिपाही विशेष

अभिभावक है। इसलिए पाकिस्तान-चीन-बांग्लादेश की यह नजदीकी कई लिहाज से भारत के लिए चिंताजनक है। बांग्लादेश का बदलता रुखा भारत के लिए खतरे की घंटी की तरह है। इसके

पूर्व के सात राज्यों के अलावा भारत के पास समुद्र तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं है। बांग्लादेश उस क्षेत्र में समुद्र का एकमात्र



जनसंख्या घनत्व दुनिया में सबसे अधिक है और संसाधन सीमित हैं। ऐसे में अक्सर यह आरोप लगाता रहा है कि बांग्लादेश अवैध प्रवास को अपनी अनाधिकारिक नीति की तरह इस्तेमाल कर भारत के पूर्वोत्तर में जनसांख्यिकीय बदलाव लाने का प्रयास कर रहा है। वर्ष 1947 के विभाजन के बाद और फिर 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान लाखों हिंदू शरणार्थी भारत आये। समय के साथ बड़ी संख्या में मुस्लिम प्रवासी भी अवैध रूप से भारत में घुसे, जो आर्थिक

कारणों से भारत आ रहे थे। बांग्लादेश ने कभी इस अवैध घुसपैठ को स्वीकार नहीं किया, बल्कि जब भी भारत सीमा पर बाड़बंदी करता है या सुरक्षा कड़ी करता है, तो बांग्लादेश हमेशा विरोध करता है।

इतिहास गवाह है कि बांग्लादेश की कुछ सरकारों ने भारत विरोधी तत्वों और पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों को समर्थन दिया है। सैन्य शासन और बीएनपी (बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी) के दौर में यह नीति ज्यादा स्पष्ट थी।

खालिद जिया ने तो पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों को स्वतंत्रता सेनानी तक कह दिया था। परंतु 2009 में शेख हसीना के सत्ता में आने के बाद इस नीति में बदलाव आया और उन्होंने भारत के साथ मिलकर उग्रवाद को कुचलने का कार्य किया, जिससे पूर्वोत्तर भारत में शांति बहाल हुई। भारत के साथ शेख हसीना की सहयोगी नीति और आतंकी तत्वों के खिलाफ कठोर रुख को बांग्लादेश के कट्टरपंथी और भारत विरोधी ताकतों ने कभी स्वीकार

नहीं किया। लेकिन जब पांच अगस्त, 2024 को शेख हसीना की सरकार को सत्ता से हटाया गया और मोहम्मद युनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार बनी, तो इन तत्वों ने फिर से सिर उठाना शुरू कर दिया। फजलुर रहमान का बयान इस बात का संकेत है कि कट्टरपंथी अब दोबारा सक्रिय हो रहे हैं और भारत विरोधी रणनीतियों को पुनर्जीवित कर रहे हैं। उन्होंने न सिर्फ भारत के खिलाफ युद्ध की बात की, बल्कि चीन के साथ सैन्य गठबंधन की भी वकालत की।

अलावा भी अतीत की कड़वाहट को परे कर पाकिस्तान और बांग्लादेश भी लगातार नजदीक आ रहे हैं। विदेश मंत्री जयशंकर पहले कई बार कह चुके हैं कि भारत, बांग्लादेश के साथ सहयोगात्मक रिश्ते चाहता है, लेकिन उसे अपना दोहरा रुखा छोड़ना होगा। इसके बावजूद भारतीय कूटनीति को भारत के इर्द-गिर्द बनते एक त्रिकोण को कोई शक्ति लेने से पहले ही रोकना होगा। क्या है आतंक का यह नया त्रिकोण और कैसे भारत के लिए यह नया टेंशन है, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह**।

उन्होंने यह भी कहा कि चीन को अरुणाचल प्रदेश पर दावा करना चाहिए। उन्होंने बांग्लादेश को समुद्र का रक्षक बताते हुए भारत के उत्तर-पूर्व को घेरे में लेने की बात की। मोहम्मद युनुस भी पूर्वोत्तर भारत को लैंडलॉकड कहकर उसे बांग्लादेश पर निर्भर बनाने की कोशिश कर चुके हैं। यह एक तरह से रणनीतिक दबाव बनाने की कोशिश है। इसी तरह युनुस सरकार के कानूनी सलाहकार आसिफ नजरूल ने पहलगाम हमले पर आपत्तिजनक टिप्पणी की, जिसे बाद में हटा दिया गया। वह लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े हारून इजहार से भी मिले थे, जिससे बांग्लादेश की आतंकी नीति पर चिंता बढ़ गयी है।

भारत ने इस पूरे घटनाक्रम को गंभीरता से लिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिस्मटेक सम्मेलन में मोहम्मद युनुस को चेतावनी देते हुए कहा कि भारत की क्षेत्रीय अखंडता के खिलाफ बयानबाजी बर्दाश्त नहीं की जायेगी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी स्पष्ट कहा कि सहयोग का मतलब अपनी सुविधा के अनुसार चुनना नहीं होता। ऐसे में भारत ने अपने सुरक्षा बलों को बांग्लादेश और म्यांमार की सीमाओं पर सतर्क रहने का निर्देश दिया है। सुरक्षा एजेंसियों को शक है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ अब बांग्लादेश के इस्लामी कट्टरपंथियों का इस्तेमाल कर भारत के खिलाफ षडयंत्र रच सकती है। इससे यह भी साफ है कि

चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के कट्टरपंथी अब एक नये रणनीतिक त्रिकोण की रचना कर रहे हैं, जो भारत के खिलाफ काम कर सकता है। पाकिस्तान और बांग्लादेश के इस नये समीकरण के पीछे चीन की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, जो अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा जताता रहा है और दक्षिण एशिया में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता है। इन सबके बीच भारत ने बांग्लादेश में चल रही रेल परियोजनाओं पर फिलहाल रोक लगा दी है। यह कदम वहाँ की राजनीतिक अस्थिरता और भारत विरोधी भावनाओं को देखते हुए उठाया गया है।

मौजूदा स्थिति में भारत के लिए आवश्यक है कि वह पूर्वोत्तर की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे और बांग्लादेश में उभरते हुए राजनीतिक घटनाक्रमों पर गहन निगरानी बनाये रखें। एक अस्थिर और भारत विरोधी बांग्लादेश दक्षिण एशिया की शांति और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, दोनों के लिए खतरा बन सकता है। इतना ही नहीं, बांग्लादेश का भारत विरोधी रुखा और पाकिस्तान-चीन के साथ उसकी बढ़ती नजदीकी भी भारत के लिए नयी समस्या पैदा कर सकती है। भारत को तुर्किये और अजरबैजान पर भी निगाह रखने की जरूरत है। सबसे पहले तो उसकी कम्पन तोड़ने की आवश्यकता है। पर्यटन बिलकुल बंद होना चाहिए। इन देशों को भी पूर्ण रूप से बायकोट करना ही एकमात्र रास्ता है।

संभल जामा मस्जिद सर्वे को हाइकोर्ट ने सही ठहराया

सर्वे शेकने की मुस्लिम पक्ष की याचिका खारिज
कहा-हिंदू पक्ष का क़ैस सुनने योग्य है

आजाद सिपाही संवाददाता

प्रयागराज/संभल। इलाहाबाद हाइकोर्ट ने यूपी के संभल की जामा मस्जिद के सर्वे पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने मस्जिद कमेटी की उस सिविल रिवीजन याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें सर्वे पर रोक की मांग की गयी थी। जस्टिस रोहित रंजन अग्रवाल की बेंच ने सोमवार को यह आदेश दिया।

कोर्ट ने कहा- अब तक इस मामले में जो भी कार्रवाई हुई, वह सही है। हम कोर्ट कमिश्नर सर्वे में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। हिंदू पक्ष की ओर से दाखिल केस सुनने योग्य हैं। कोर्ट कमीशन सर्वे और दाखिल वाद पहले की तरह जारी रहेगा। यानी, जामा मस्जिद है या मंदिर इसका मुकदमा भी संभल की लोअर कोर्ट (दीवानी अदालत) में चलता रहेगा।

दरअसल, हिंदू पक्ष की याचिका पर संभल कोर्ट ने 19 नवंबर 2024 को जामा मस्जिद के एडवोकेट कमिश्नर सर्वे का आदेश दिया। उसी शाम टीम सर्वे के लिए पहुंच गयी थी। रात होने के कारण सर्वे पूरा नहीं हो पाया था। 5 दिन बाद यानी 24 नवंबर



को दोबारा सर्वे के लिए एडवोकेट कमिश्नर और अस्क टीम पहुंची थी। इस दौरान हिंसा भड़क गयी। इसमें 4 लोगों की मौत हो गयी थी।

अब आगे क्या होगा?

मस्जिद कमेटी हाइकोर्ट से रिवीजन याचिका खारिज होने के बाद सुप्रीम कोर्ट जा सकता है। हाइकोर्ट में पुनर्विचार याचिका दाखिल कर सकता है, ताकि सर्वे को रुकवाया जा सके। हिंदू पक्ष की कोशिश होगी कि सर्वे जल्दी शुरू हो। पूजा के अधिकार के लिए कोर्ट में पक्ष पेश करेगा। कोशिश होगी कि जल्द से जल्द लोअर कोर्ट से फैसला आये।

हिंदू पक्ष का दावा- संभल मस्जिद नहीं, हरिहर मंदिर है

संभल की जामा मस्जिद को लेकर हिंदू पक्ष का दावा है कि ये

पहले हरिहर मंदिर था, जिसे बाबर ने 1529 में तुड़वाकर मस्जिद बनवा दिया। इसे लेकर 19 नवंबर, 2024 को संभल कोर्ट में याचिका दायर हुई। यह याचिका संभल में स्थित कैलादेवी मंदिर के महंत ऋषि राज गिरि महाराज ने लगायी। उसी दिन यानी 19 नवंबर को सिविल जज सीनियर डिवीजन आदित्य सिंह ने मस्जिद के अंदर सर्वे करने का आदेश दिया। कोर्ट ने रमेश सिंह राघव को एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त किया। उसी दिन शाम 4 बजे सर्वे के लिए टीम मस्जिद पहुंच गयी। 2 घंटे सर्वे किया। हालाँकि, उस दिन सर्वे पूरा नहीं हुआ। इसके बाद 24 नवंबर को सर्वे की टीम जामा मस्जिद पहुंची। मस्जिद के अंदर सर्वे हो रहा था। इसी दौरान भारी संख्या में लोग जुट गये। भीड़ ने पुलिस की टीम पर पत्थर फेंके। इसके बाद हिंसा भड़क गयी। इसमें गोली लगने से 4 लोगों की मौत हो गयी।

यूट्यूबर मनीष कश्यप को जूनियर डॉक्टरों ने पीटा

महिला डॉक्टरों से कहासुनी के बाद पिटाई

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। चर्चित यूट्यूबर और बीजेपी नेता मनीष कश्यप की सोमवार को पीएमसीएच के जूनियर डॉक्टरों ने पिटाई कर दी। ये घटना तब हुई जब मनीष कश्यप किसी मरीज की पैरवी करने अस्पताल पहुंचे थे। वहां उनकी महिला डॉक्टरों से बहस हो गयी।

डॉक्टरों का आरोप है कि मनीष कश्यप ने उनसे अभद्र भाषा में बात की, जिसके बाद जूनियर डॉक्टरों ने उन्हें पीटा। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला और मनीष कश्यप को बचाया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पीएमसीएच के एक डॉक्टर ने बताया कि मनीष कश्यप एक मरीज के लिए सिफारिश करने आये थे। उसी दौरान उनकी महिला डॉक्टरों से कहासुनी हो गयी। आरोप है कि मनीष कश्यप ने महिला डॉक्टर से गलत तरीके से बात की। इससे गुस्साए जूनियर डॉक्टरों ने मनीष कश्यप को पीटना शुरू कर दिया। काफी देर तक पीएमसीएच में हंगामा होता रहा। डॉक्टरों ने मनीष कश्यप को घेर लिया और उनकी पिटाई कर दी। पौरबहोर के थानाध्यक्ष ने इस घटना की पुष्टि की है। उन्होंने



बताया कि पीएमसीएच कैम्पस में मारपीट हुई है। शुरूआती जानकारी के अनुसार, यूट्यूबर और डॉक्टरों के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ। यह झगड़ा इतना बढ़ गया कि मारपीट शुरू हो गयी। इस दौरान मनीष कश्यप को काफी पीटा गया। पुलिस घटना के कारणों की जांच कर रही है। अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि झगड़े की असली वजह क्या थी। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि मारपीट के दौरान पीएमसीएच परिसर में मौजूद मरीज और उनके परिवार वाले डर गये थे। कुछ लोगों ने बताया कि यूट्यूबर शायद कैम्पस में वीडियो बना रहे थे। कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति जतायी, जिसके बाद बात बिगड़ गयी।

पाकिस्तान की माहिद बेगम को चाहिए भारत की नागरिकता धनबाद में की है शादी, अब दे रही है आवेदन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पाकिस्तान की रहने वाली माहिद बेगम को भारत की नागरिकता चाहिए। माहिद गैरकानूनी ढंग से पिछले कई वर्षों से झारखंड के धनबाद में रह रही है।

भारत और पाकिस्तान के रिश्ते जब खराब हुए तो इसे लगा कि कहीं उसे भी वापस पाकिस्तान ना

गैरकानूनी ढंग से कई वर्षों से धनबाद में रह रही है

भेज दिया जाये। लिहाजा उसने धनबाद जिला प्रशासन को एक आवेदन दिया और नागरिकता दिलाने की अग्रतार कार्रवाई का अनुरोध की।

पाकिस्तानी महिला की फाइल झारखंड के गृह विभाग को भेज

दी गयी है। अधिकारी परेशान हैं कि आखिर इसमें क्या किया जाये। उसने लिखा है कि उसकी शादी धनबाद के रहने वाले मोहम्मद सिदिकी अंसारी से हुई है। लिहाजा उसे नागरिकता मिलनी चाहिए। फिलहाल उसकी फाइल को वापस धनबाद भेजा जा रहा है और स्पष्ट आवेदन करने का निर्देश दिया गया है।

बेटी के साथ दुष्कर्म करने वाले हैवान अब्बा को अंतिम सांस तक के लिए आजीवन सश्रम कारावास

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। विशेष न्यायाधीश पोक्सो के न्यायाधीश दिनेश कुमार की अदालत ने सोमवार को एक पिता के द्वारा अपनी नाबालिक पुत्री के साथ दुष्कर्म करने वाले गढ़वा थाना अंतर्गत संग्रह खुर्द निवासी शेख इम्तियाज को आंतिम सांस तक के लिए आजीवन सश्रम कारावास एवं एक लाख रुपये आर्थिक जुर्माना की सजा सुनायी है। इस संबंध में जानकारी देते हुए गढ़वा पुलिस अधीक्षक दीपक पांडेय ने बताया कि गढ़वा थाना क्षेत्र स्थित संग्रह खुर्द निवासी पीड़िता के दादा शेख एल्लाह के द्वारा लिखित आवेदन के आधार

पर गढ़वा थाना कांड संख्या 197/ 2023 दिनांक 15 मई 2023को प्राथमिक की दर्ज की गयी थी। जिसमें आरोप लगाया गया था कि पीड़िता अपने घर में मायूस रहा करती थी। इस दौरान उसने दादा को बतलाया कि ईद से पहले रोजी के समय पीड़िता के पिता के द्वारा दुष्कर्म किया जाता था। डरा धमका कर बोलते हैं कि यह बात किसी को बतानेगी तो तेरी जीभ काट देंगे और डेम में फेंक देंगे। इस आशय की जानकारी पर प्राथमिक की दर्ज कर 20 मई 2023 को गढ़वा थाना के द्वारा अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उसके विरुद्ध भादवि की धारा 376 ए बी 5 एम

एवं 6 पोक्सो एक्ट के तहत आरोप पत्र समर्पित किया। न्यायालय द्वारा विभिन्न धाराओं में संज्ञान लेते हुए आरोपी के विरुद्ध आरोप गठन कर त्वरित कार्रवाई करते हुए अभियोजन पक्ष को साक्ष्य प्रस्तुत करने हेतु तिथि निर्धारित की गयी। लोक अभियोजक उमेश दीक्षित के द्वारा साक्ष्य प्रस्तुत कराया गया। दोनों पक्षों की सुनवाई करते हुए न्यायालय द्वाराअभियुक्त को दोषी करार दिया गया। सजा के बिंदु पर सुनवाई कर अभियुक्त को आजीवन सश्रम कारावास एवं एक लाख आर्थिक जुर्माना की सजा सुनाते हुए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

सीएम हेमंत सोरेन ने दी कपूर कुमार टुडू को श्रद्धांजलि

आजाद सिपाही संवाददाता

चांडिल। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को अपनी पत्नी एवं विधायक कल्पना सोरेन के साथ झारखंड आंदोलनकारी और सामाजिक कार्यकर्ता दिवंगत कपूर कुमार टुडू के पैतृक आवास पहुंचे।

चिलगू-चाकुलिया स्थित घर में उन्होंने कपूर टुडू की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी और शोककुल परिवार से मिलकर सात्वना दी। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनों को दुख सहने की शक्ति देने की प्रार्थना की। गौरतलब है कि कपूर कुमार टुडू मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के फुफेरे भाई थे। उनका निधन 6 मई 2025 को हुआ था। वे अपने पीछे मां, पत्नी, दो पुत्र और एक पुत्री को छोड़ गये हैं।



झारखंड में मतदाता सूची के विरुद्ध एक भी अपील दायर नहीं : मुख्य चुनाव आयुक्त

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने नयी दिल्ली में दो-दिवसीय क्षमता-निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा कि झारखंड भ्रमण के दौरान दशम जलप्रपात की बीएलओ दीर्घियों से मिलने का मौका प्राप्त हुआ। उनकी निर्वाचन से संबंधित अपने विषयों की जानकारी अत्यंत ही प्रभावशाली है। उन्होंने झारखंड में निर्वाचन से संबंधित सभी स्टेकहोल्डर्स के कार्यों की सराहना की। साथ ही कहा कि विगत के मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रमों के उपरांत झारखंड में बने मतदाता सूची के विरुद्ध एक भी अपील दायर नहीं



हुई है। यह एक सराहनीय उपलब्धि है, लेकिन हमें इस ओर भी सभी मतदाताओं को शिक्षित करना है।

यदि मतदाता सूची से वह किसी प्रकार से असहमत हैं, तो वह जिला निर्वाचन पदाधिकारी के समक्ष अपील कर सकते हैं और

उनके निर्णय के विरुद्ध मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के स्तर पर भी अपील की जा सकती है। हमें सभी लोगों को शिक्षित करते हुए मतदाता सूची को शत प्रतिशत संतुष्टि के साथ निर्मित करना है, जिससे इसकी चमक हीरे की तरह बनी रहे।

आतंकवाद पर पाकिस्तान की नीति होगी बेनकाब : निशिकांत

ओवैसी के साथ मिलकर बतायेंगे भारत के लोकतंत्र का खूबसूरत चेहरा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर से बौखलायी पाकिस्तानी सेना की हिमाकत का क्या हथ्र हुआ, इसको पूरी दुनिया ने देखा। लेकिन भारतीय सेना से करारी शिकस्त मिलने के बाद भी पाकिस्तान झूठ का एजेंडा चलाता रहा। अब उसके झूठ की पोल खोलने की जिम्मेदारी सांसदों के सात प्रतिनिधिमंडल को दी गयी है, जो अमेरीका, रूस, यूरोप, अफ्रीका, साउथ अफ्रीका समेत मुस्लिम देशों में जाकर बतायेंगे कि आतंकवाद के साथ पाकिस्तान का क्या कनेक्शन है। बैजयंत पांडा के नेतृत्व में बने आठ सदस्यीय प्रतिनिमंडल में शामिल झारखंड के गोड्डा से



भाजपा सांसद निशिकांत दुबे बेहद उत्साहित नजर आ रहे हैं। उन्होंने इस बात पर ज्यादा खुशी जतायी है कि उनकी टीम में एआइएमआइएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी भी हैं।

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए लिखा है कि आपने मुझे ऑपरेशन सिंदूर के बाद दुनिया के सामने पाकिस्तान की कारगुजारियों और भारत के आतंकवाद के खिलाफ 78 साल

से हमारे संघर्ष को मुस्लिम देशों को बताने के लिए चुना। लोकतंत्र का सबसे खूबसूरत चेहरा मैं और ओवैसी साहब एक साथ भारत के लोकतंत्र और मुसलमानों के भारत में मिले सम्मान, स्वाभिमान व समानता को बतायेंगे।

दुनिया का तीसरा मुस्लिम बहुल देश है भारत

सांसद निशिकांत दुबे ने एक्स पर जारी अपने दूसरे पोस्ट में

भाजपा छोड़ कई महिलाओं ने थामा झामुमो का दामन

केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय ने सभी को पार्टी की सदस्यता दिलायी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय कार्यालय में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में भाजपा की कार्यसमिति सदस्य अंकिता वर्मा के नेतृत्व में रांची की सैकड़ों महिलाओं ने झामुमो की सदस्यता ली। इस अवसर पर झामुमो के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय ने सभी को पार्टी की सदस्यता दिलायी और पार्टी में स्वागत किया।

उन्होंने पार्टी में शामिल होने वाली महिलाओं को झामुमो के नीति सिद्धांतों से अवगत कराया गया और संगठन को मजबूत करते हुए राज्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए संकल्प दिलाया गया। इस अवसर



पर मुख्य रूप से रानी देवी, सरिता देवी, मधु देवी, सुधा देवी, अनीता देवी, बबीता देवी, लक्ष्मी देवी, आरती देवी, संगीता देवी, सुनीता देवी, गीता देवी, विक्की वर्मा एवं अन्य महिलाएं शामिल हुईं। इस अवसर पर मुख्य रूप से रांची जिला संयोजक प्रमुख

सुनीता देवी, सुमन देवी, प्रीति देवी, पूजा देवी, ननकी देवी, किरण देवी, पंकी देवी, सुमन देवी, गीता देवी, विक्की वर्मा एवं अन्य महिलाएं शामिल हुईं। इस अवसर पर मुख्य रूप से रांची जिला संयोजक प्रमुख

मुस्ताक आलम, केंद्रीय सदस्य सह संयोजक मंडली सदस्य अश्विनी शर्मा, संयोजक मंडली सदस्य डॉ हेमलाल मेहता, नयनतारा उरांव, संध्या गुड़िया एवं प्रदीप मिर्धा और अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झारखंड सरकार ने तीन जिलों में की काजी की नियुक्ति
रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार ने राज्य के तीन जिलों में काजी की नियुक्ति की है, जो मुस्लिम समुदाय के लोगों के बीच विवाह और प्रमाण पत्र जारी करने के लिए अधिकृत होंगे। इस संबंध में राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग ने अधिसूचना जारी की है। जारी आदेश में इन काजियों को विवाह निबंधक घोषित किया गया है, जो मुस्लिम समुदाय के लोगों के बीच विवाह और प्रमाण पत्र जारी करने के लिए जिम्मेदार होंगे। नियुक्त काजी के नाम : रांची जिला : मौलाना नसीरुद्दीन और मौलाना अनसारुल्लाह। झुमरीतिलैया: मोहम्मद नसीम। हजारीबाग: कैफ़ी अहमद।

सिर्फ घुसपैठिए नहीं, कांग्रेस विधायक भी बनवा रहे फर्जी दस्तावेज : बाबूलाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि झारखंड में सिर्फ बांग्लादेशी घुसपैठिए ही नहीं, बल्कि आइएएस अधिकारी और कांग्रेस के विधायक भी अपना फजी दस्तावेज बनवा रहे हैं। कांग्रेस की एक विधायक दो पैन कार्ड और चार वोटर आइडी के साथ लोकतंत्र का मजाक बना रही हैं। उन्होंने आगे कहा कि चुनाव आयोग को शोखा देना, गलत हलफनामा देना और जनता से तथ्यों को छिपाना-क्या यही है कांग्रेस का जनप्रतिनिधित्व। बाबूलाल ने आगे



लिखा है कि झारखंड में यह पहली बार नहीं हो रहा है। पहले केवल बांग्लादेशी घुसपैठियों के फर्जी दस्तावेज बन रहे थे, अब इसमें विधायकों के नाम भी सामने आ रहे हैं। भाजपा नेता ने इसे गंभीर स्थिति बताते हुए कहा कि बहती गंगा में हाथ धोने वालों की कतार काफी

लंबी है। जन्म प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, पैन कार्ड जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों में छेड़छाड़ से सरकारी योजनाओं, नौकरी में आरक्षण और मतदाता सूची जैसी संवेदनशील व्यवस्थाएं प्रभावित हो रही हैं, जो राज्य की सामाजिक, सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत गंभीर है। बाबूलाल ने मांग की कि राज्य सरकार फर्जी प्रमाण पत्र बनाने और बनवाने वाले लोगों को चिह्नित कर उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करे, ताकि भविष्य में ऐसी गड़बड़ियों पर रोक लगायी जा सके।

राज्यपाल से अन्नपूर्णा देवी ने की मुलाकात



आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से सोमवार को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने

राज भवन में मुलाकात की। राजभवन की ओर से राज्यपाल और केंद्रीय मंत्री की इस मुलाकात को शिष्टाचार भेंट बताया गया है।



रक्षा मंत्रालय की आधिकारिक यात्रा पर सोमवार को केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ मलेशिया पहुंचे। यहां भारत के उच्चायुक्त बीएन रेड्डी ने उच्चायोग और रक्षा क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ लंगकावी हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया।

स्वास्थ्य बीमा योजना पुलिसकर्मियों को 25 तक आवेदन का अंतिम मौका

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड सरकार की स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत राज्य के सभी पुलिस अधिकारियों और कर्मियों को आवेदन और सत्यापन करने के लिए 25 मई तक अंतिम मौका दिया गया है। इस संबंध में पुलिस मुख्यालय ने सभी जिलों, इकाइयों और कार्यालयों को निर्देश भेजे हैं कि वे समय पर योजना के पोर्टल पर आवेदन प्रक्रिया पूरी करायें। उल्लेखनीय है कि स्वास्थ्य विभाग ने इस बारे में पुलिस मुख्यालय को 5 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर मिलेगा।

लेकिन समीक्षा में पाया गया कि अब भी कई अधिकारी और कर्मचारी पंजीकरण और सत्यापन के साथ आवेदन नहीं दिये हैं। ऐसे में सभी पुलिसकर्मियों को हर हाल में 25 मई तक अपना आवेदन पूरा करने के लिए कहा गया है। मुख्यालय ने स्पष्ट किया है कि जो पुलिसकर्मी 25 मई तक आवेदन नहीं करेंगे, वे इस लाभ से वंचित रह सकते हैं। बता दें कि इस योजना के तहत पंजीकरण और सत्यापन पूरा होने के बाद पुलिसकर्मियों को 5 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर मिलेगा।

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य की कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिकी ने सोमवार को रांची के गढ़खटंगा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) कैपस का निरीक्षण किया। उन्होंने बाढ़ों बनी बायोमास गैसीफायर सह बायोचर उत्पादन इकाई का उद्घाटन भी किया। इस मौके पर उन्होंने संस्थान की ओर से ज्ञान और विज्ञान के साझा प्रयास से उन्नत कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

मंत्री शिल्पी नेहा तिकी ने कहा कि आज का दौर ज्ञान और विज्ञान से जुड़कर कृषि क्षेत्र में कदम बढ़ाने का है। आइसीएआर संस्थान किसानों को प्रशिक्षण देने के साथ-



साथ उन्हें विकसित करने की दिशा में बेहतर काम कर रहा है। संस्थान के विकास के लिए राज्य सरकार ने 124 एकड़ भूमि मुहैया करायी है। उन्होंने कहा कि बीएयू संस्थान को

भी 700 एकड़ भूमि उपलब्ध करायी जा चुकी है। आदिवासी-मूलवासी के पास जमीन ही सबसे बड़ी पूंजी है। समय-समय पर संस्थाओं के विस्तार और विकास

के लिए उन्होंने जमीन दिया। राज्य के लोग और राज्य का विकास ही संस्थान का उद्देश्य होना चाहिए। राज्य सरकार भी किसानों के जीवन को बेहतर करने का काम

कर रही है। लाह के उत्पादन में कई किसान बेहतर काम कर रहे हैं। सहकारिता विभाग के पांच एपेक्स सोसाइटी किसानों के उत्पाद को सही बाजार उपलब्ध कराने में जुटी है।

किसान खुद को सशक्त बनायें

कृषि मंत्री ने कहा कि चाहे वो संस्थान के प्रयास हों या विभाग की योजनाएं, किसानों को इसके लिए खुद को जागरूक करना होगा। किसान खुद को सशक्त बनाकर गांवों-पंचायतों को सशक्त बनाने में अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। इससे पहले आइसीएआर कैपस में अनुसूचित

जनजाति परियोजना एवं राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत प्रक्षेत्र दिवस सह कृषि इनपुट वितरण का आयोजन किया गया। इसमें करीब 300 किसानों के बीच कृषि सामग्री का वितरण किया गया। दरअसल, आइसीएआर की ओर से कृषि के क्षेत्र में कई तरह के नये प्रयोग किये जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए फसल के चयन और उसके पैदावार को बढ़ाने की दिशा में संस्थान के द्वारा किये जा रहे कार्य की जानकारी मंत्री को दी गयी। मौके पर विभागीय सचिव अबू बक्कर सिद्दीकी, सलाहकार प्रदीप हजारी, आइसीएआर के निदेशक सुजय रक्षित विशेष रूप से मौजूद रहे।



A photograph showing five men in a meeting room. One man in a light blue shirt sits at a desk with a computer monitor. Three other men stand around a glass-topped table, looking at documents. A fifth man in a red shirt is partially visible in the foreground, also engaged in the discussion. The setting appears to be a formal office or conference room.

A photograph of a cluttered room, likely a dormitory. The floor is covered with various items, including a large red bag, a white bag, and other miscellaneous objects. A red bag is hanging on the wall. The room appears to be in a state of disarray.

आतंकवाद के खिलाफ भारत की जीरो टॉलरेंस पॉलिसी और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में दुनिया को बताने के लिए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का सरकार का फैसला जितना सराहनीय है, उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण है, इसका विवादों में घिर जाना। देश की सुरक्षा और विदेश नीति से जुड़े विषय पर राजनीति किसी के हित में नहीं है। **पाक को घेरने की नीति** : पहलगाम में आतंकियों की नृशंसता के बावजूद जवाब देते हुए भारत ने जिस तरह संयम बरता, उसकी तारीफ सभी कर रहे हैं। पाकिस्तान की तरफ से उकसावे वाले कदमों के बाद भी भारत की प्रतिक्रिया सधी, सटीक और नियंत्रित रही। हिंदुस्तान ने पाकिस्तान को जवाब ही नहीं दिया, उसकी असलियत भी दुनिया के सामने ला दी है। इस्लामाबाद के बचे हुए सपोर्ट सिस्टम को खत्म करने और भारत की चिंता और स्टैंड से दुनिया को वाक़िफ कराने के लिए सरकार की ओर से सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विभिन्न देशों में भेजे जायेंगे। **मकसद पर सवाल** : ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सभी दलों ने सरकार और सेना के प्रति समर्थन जताया था। सरकार ने भी उसी भावना का सम्मान करते हुए सभी दलों से सांसदों को प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया है, लेकिन कांग्रेस के सदस्यों, खास कर सांसद शशि थरूर को लेकर हो रहा विवाद बिक्कुल अनचाहा है। इससे एक अच्छा मकसद नकारात्मक खबरों में घिर गया है। **कहां गयी एकजुटता** : कांग्रेस ने थरूर का नाम नहीं भेजा था, सरकार ने उन्हें अपनी तरफ से शामिल कर लिया।

जिनके नाम कांग्रेस ने दिये थे, उनमें से सिर्फ़ आनंद शर्मा चुने गये। कांग्रेस का आरोप है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मसले पर भाजपा ओछी राजनीति कर रही है। वहीं, भाजपा ने कांग्रेस के भेजे नामों पर गंभीर सवाल उठाए हैं। यह तस्वीर उससे बिक्कुल अलग है, जब सारे दल आतंकवाद के खिलाफ जंग में एकजुट नजर आ रहे थे। **विवाद नहीं, संवाद चाहिए** : थरूर पहले संयुक्त राष्ट्र में काम कर चुके हैं, विदेश राज्य मंत्री रह चुके हैं। उनके अनुभव का फायदा निश्चित रूप से डेलिगेशन को मिलेगा। हालांकि कांग्रेस को लगता है कि उसके सांसद को चुनने से पहले उससे पूछा जाना चाहिए था। इस अपेक्षा को गलत नहीं कहा जा सकता। मगर इसे विवाद का मुद्दा बनाने से बचा जा सकता था। अच्छा होता कि सत्ता पक्ष और विपक्ष सार्वजनिक आरोप-प्रत्यारोप के बजाय सीधे आपस में बात करते। **राजनीति से ऊपर** : शशि थरूर और कांग्रेस के रिश्ते पिछले कुछ समय से ठीक नहीं रहे हैं, लेकिन यह एक सांसद और उसकी पार्टी के बीच का मसला है। यहां जो मुद्दा सामने है, वह देश से जुड़ा है। इसमें सभी को दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।



घाघीडीह केंद्रीय कारा और घाटशिला उपकारा में जेल अदालत सह चिकित्सा शिविर का आयोजन



जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। घाघीडीह केंद्रीय कारा में जेल अदालत सह चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। मौके पर प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी अर्चना मिश्रा मौजूद रही, वहीं न्यायिक दंडाधिकारी, रेलवे कोर्ट चाईबासा वरुंअल रूप से जुड़े थे। शिविर में विशेष कर वैसे बंदियों को चिन्हित किया गया जिनके परिवार वाले जमानत के लिए उपस्थित नहीं हो रहे हैं। साथ ही वैसे बंदी को अधिवक्ता रखने में सक्षम नहीं है। उनकी बारे में जानकारी ली गयी। न्यायिक दंडाधिकारी अर्चना मिश्रा ने कारा के बंदियों से एक-एक कर बात कर उनसे उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। जेल में रहन-सहन, भोजन, न्यायिक सहयोग परिवार के संबंध में हर मुद्दे पर बंदियों से बात की गई। जेल अदालत में कुल-05 वादो को रखा गया। जिसमें 05 वादो का निष्पादन हुआ। 05 बंदी लाभाचिंत हुए। 05 बंदियों में से 01 बंदी तत्काल कारा से मुक्त हुए। 01 बंदी पर अन्य वाद लंबित रहने तथा शेष 03 बंदी पर अर्थदण्ड की राशि जमा नहीं करने के फलस्वरूप कारा से मुक्त नहीं किये जा सके इस अवसर पर कारा में चिकित्सा शिविर लगाया गया। जिसमें कारा चिकित्सा प्रदाधिकारी द्वारा बंदियों का स्वास्थ्य जांच की गयी।

फोटोग्राफर सोसाइटी ऑफ झारखंड का सिनेमैटिक और फिल्म मेकिंग वर्कशॉप 25 मई को साकची में



जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। फोटोग्राफर सोसाइटी ऑफ झारखंड की ओर से आगामी एक दिवसीय मास्टर सिनेमैटिक और फिल्म मेकिंग वर्कशॉप को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। सोमवार की शाम मोदी पार्क में बैठक के दौरान कार्यक्रम के लिए पोस्टर लॉन्चिंग किया गया। मौके पर सोसाइटी के सदस्यों, फोटोग्राफरों, उभरते फिल्ममेकरों और कला-प्रेमियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। पोस्टर का अनावरण करते हुए अध्यक्ष सुमन शर्मा ने बताया यह वर्कशॉप आगामी 25 मई को साकची के एक होटल में किया जायेगा। वर्कशॉप में फिल्म निर्माण, सिनेमैटिक तकनीकों, एडिटिंग सिकल्स और विजुअल स्टोरीटेलिंग में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए एक अनूठा अवसर है। यह वर्कशॉप प्रदेश में क्रिएटिव प्रोफेशनल्स के विकास के लिए आयोजित की जा रही है, जिससे युवाओं को तकनीकी जानकारी के साथ-साथ प्रैक्टिकल अनुभव भी मिलेगा। पोस्टर लॉन्चिंग कार्यक्रम में अन्य क्ताओं ने कहा झारखंड में छुपी प्रतिभाओं को सही मंच देने के उद्देश्य से सोसाइटी लगातार प्रयासरत है। आनेवाले समय में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहेंगे।



अभिमत

आजाद सिपाही

जीइएम-सार्वजनिक खरीद को आकर्षक बनाने का सार्थक प्रयास



निःसंदेह सार्वजनिक खरीद से जुड़े परिदृश्य में एक असाधारण तकनीकी उपाय के रूप में उभरा है। कारोबार के आकार की दृष्टि से, जीइएम निक्ट भविष्य में दुनिया का सबसे बड़ा सार्वजनिक खरीद पोर्टल बन जायेगा और दक्षिण कोरिया के कोनेप्स जैसी सुप्रतिष्ठित संस्थाओं को पीछे छोड़ देगा। जीइएम ने ईमानदारी से व्यावसाय करने प्रतिष्ठानों को व्यापक अवसर प्रदान किए हैं, नैकरियां सृजित की हैं और भारत के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया है। इस संदर्भ में, जीइएम का महत्व वित्तीय दृष्टि से इसकी अभूतपूर्व प्रगति से कहीं बढ़कर है जो अपने आप में इ-कॉमर्स से जुड़ी किसी भी बड़ी कंपनी को हैरान कर देने के लिए काफी है। **न्यायसंगत विकास का वाहक** : जीइएम प्रधानमंत्री मोदी के सबका साथ, सबका विकास मिशन के अनुरूप न्यायसंगत विकास के एक महत्वपूर्ण वाहक के रूप में कार्य करता है। यह स्टार्टअप, छोटे व्यवसायों और महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों को बिना किसी बिचौलियों के सरकारी खरीदारों के सामने अपने उत्पादों एवं सेवाओं को प्रदर्शित करने का एक आसान रास्ता प्रदान करता है। प्रवेश की सभी बाधाओं को दूर करके, यह प्लेटफॉर्म छोटे घरेलू व्यवसायों को इ-टेंडर में भाग लेने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने का अधिकार देता है।



सैन्य अधिकारियों पर टिप्पणियों का विरोध, सड़क पर उतरे पूर्व सैनिक

आजाद सिपाही संवाददाता **जमशेदपुर।** अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद जमशेदपुर के सदस्यों ने भारत सरकार से कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह के खिलाफ की गयी आपत्तिजनक टिप्पणियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की। परिषद के सदस्यों ने शहीद स्मारक से बजरंग चौक (गोलमुरी) तक विरोध मार्च निकाला और सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की। परिषद ने एक स्वर में कहा कुछ नेताओं द्वारा सेना की महिला अधिकारियों पर की गयी जाति और धर्म आधारित टिप्पणियां अत्यंत निंदनीय और देश की सुरक्षा व्यवस्था का अपमान हैं। पूर्व सैनिकों का मानना है यह मामला केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि राष्ट्र की सशस्त्र

छऊ नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत की पहचान कलाकारों को सहयोग मिलेगा : संजीव सरदार

आजाद सिपाही संवाददाता **पोटका/ जमशेदपुर।** पोटका विधानसभा क्षेत्र के जुड़ी पंचायत अंतर्गत तिरिंग गांव में श्री श्री सार्वजनिन शिव पूजा कमेटी के तत्वावधान में छऊ नृत्य महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। मौके पर सरायकेला-खरसावां के मारंगगाहातु और आरंबा से आए छऊ नृत्य दलों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया इससे पूरे मुख्य अतिथि पोटका विधायक संजीव सरदार के द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। विधायक ने कहा छऊ नृत्य झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। जो



सेनाओं की गरिमा और अनुशासन पर सीधा हमला है। सेना देश की वह संस्था है जो अब भी ईमानदारी, अनुशासन और बलिदान की भावना से कार्य करती है। इस पर हमला, पूरे देश की आत्मा पर हमला है। उन्होंने कर्नल सोफिया कुरैशी को 'आतंकवादियों की बहन' कहने को धार्मिक सद्भाव को बिगाड़ने वाला बताया और कहा बीएसएफ धारा 196 (1बी) के अंतर्गत यह आपराधिक



राज्य की पहचान विश्व स्तर तक पहुंचा रहा है। श्री सरदार ने कहा पारंपरिक कला और संस्कृति को संरक्षण देना हमारी प्राथमिकता है। सरकार कलाकारों को हर स्तर पर सहयोग प्रदान करेगी। ताकि यह धरोहर जीवित रह कर नई पीढ़ी तक पहुंच सके। विधायक श्री

समावेशिता के सिद्धांत से प्रेरित : जीइएम ने छोटे व्यवसायों के विकास को समर्थन देने के उद्देश्य से विभिन्न रणनीतिक पहलों का समावेश किया है। इनमें सरकारी खरीदारों को सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसइ) और महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों द्वारा पेश किये जाने वाले उत्पादों एवं सेवाओं की पहचान करने तथा उनका चयन करने में मदद करने वाली प्रणालियां शामिल हैं। **लक्ष्य से आगे** : जीइएम पर स्टार्टअप रनवे और वुमनिया जैसे सर्मापित स्टोरफ्रंट ने इन व्यवसायों की दृश्यता के साथ-साथ सार्वजनिक खरीद में उनकी हिस्सेदारी को भी प्रभावी ढंग से बढ़ाया है। इससे सरकार को सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसइ) से 25 प्रतिशत खरीद और महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों से 3 प्रतिशत खरीद के अपने लक्ष्यों को पूरा करने और उससे आगे निकलने में मदद मिली है। जीइएम पर किये गये कुल कारोबार का लगभग 38 प्रतिशत हिस्सा सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसइ) को दिया गया है और महिला उद्यमों द्वारा खरीद की हिस्सेदारी लगभग 4 प्रतिशत है। अप्रैल 2025 तक 30,000 से अधिक स्टार्टअप ने जीइएम के जरिए 38,500 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया है। इसके अलावा 1.81 लाख उद्यम-सत्यापित महिला उद्यमियों ने जीइएम पोर्टल पर लगभग 50,000 करोड़

वर्तमान ई-मार्केटप्लेस (जीइएम) पूरी दुनिया में तेजी से उभरा है। यह प्लेटफॉर्म 16 लाख से अधिक सरकारी खरीदारों को 23 लाख विक्रेताओं एवं सेवा प्रदाताओं से जोड़ता है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण का एक प्रमुख वाहक बन गया है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस परिवर्तनकारी डिजिटल पहल को शुरू किये जाने के बाद से नौ वर्षों के दौरान, जीइएम ने भ्रष्टाचार को खत्म करके और स्टार्टअप, एमएसएमइ, महिलाओं एवं छोटे शहरों के व्यवसायों को व्यावसायिक अवसर प्रदान करके सरकार द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है।

जीइएम-सार्वजनिक खरीद को आकर्षक बनाने का सार्थक प्रयास



करोड़ रुपये से अधिक के ऑर्डर पर 3 लाख रुपये का सीमित शुल्क लेगा - जोकि पहले के 72.50 लाख रुपये के शुल्क से काफी कम है। **प्रौद्योगिकी, एआइ** : एक ठोस तकनीकी बुनियादी ढांचे से लैस, यह प्लेटफॉर्म विभिन्न तकनीकी उपायों का उपयोग कर-के व्यापार करने के नए एवं आसान तरीके पेश करते हुए लगातार विकसित होता जा रहा है। जीइएम ने जीइएम एआइ नामक एक एआइ-संचालित चैटबॉट का समावेश किया है - यह संवादात्मक विश्लेषण और व्यावसायिक बुद्धिमत्ता में प्रशिक्षित एक उपकरण है। यह स्मार्ट चैटबॉट आठ स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध है और जीइएम पोर्टल पर व्यापार करने में आसानी को और बढ़ाने के लिए वॉयस कमांड कार्यक्षमता सहित नवीनतम तकनीकों से लैस है। जीइएम सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसइ) विक्रेताओं के लिए वित्तपोषण संबंधी उत्पाद भी प्रदान करता है। यह पात्र खरीद आर्डरों के लिए 10 मिनट से भी कम समय में गिरवी-मुक्त वित्तपोषण प्रदान करता है। इस प्लेटफॉर्म ने जीइएम सहाय 2.0 पेश किया है, जो 10 लाख रुपये तक के ऋण को हासिल करने के लिए एकल खिड़की के रूप में कार्य करता है। इस प्लेटफॉर्म को और अधिक समावेशी एवं प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु पहले की अपेक्षा अधिक पहलों एवं तकनीकी उपायों पर काम चल रहा है। जीइएम पोर्टल भारत के आर्थिक विकास और प्रधानमंत्री मोदी के प्रगति संबंधी उद्देश्यों को आगे बढ़ाने वाले एक महत्वपूर्ण वाहक के रूप में सक्रिय है। यह समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों को सशक्त बनाने एवं उनका उत्थान करने तथा उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए हमेशा अतिरिक्त प्रयास करेगा और साथ ही यह भी सुनिश्चित करेगा कि कर्ददाताओं के पैसे का कुशलतापूर्वक उपयोग प्रतिस्पर्धी मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की खरीद के लिए किया जाये। **(लेखक : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री हैं।)**



यातायात पुलिस की मनमानी के खिलाफ आजसू को मिला जनता का समर्थन

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। आजसू पार्टी के जिला अध्यक्ष कन्हैया सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा यातायात पुलिस के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन में आम जनता का अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त है। प्रथम चरण में जिले के विभिन्न चौक और सार्वजनिक स्थलों पर जनसमर्थन अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान शहर के कुल 14,680 नागरिकों ने हस्ताक्षर कर आजसू पार्टी के रुख का समर्थन किया। कन्हैया सिंह ने कहा जनमत के समर्थन में आजसू पार्टी का यह आंदोलन जनहित में लिया गया एक सही निर्णय है। उन्होंने बताया अब आंदोलन के द्वितीय चरण में जिले के जनप्रतिनिधियों, स्थानीय सांसद, विधायक, जिला परिषद सदस्य, मुखिया, सरपंच व विभिन्न सामाजिक संगठनों सहित प्रबुद्ध जनों के साथ संवाद स्थापित कर समर्थन लिया जाएगा। द्वितीय चरण में एक हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन डीसी के माध्यम से मुख्यमंत्री को सौंपा जाएगा। जिसमें यातायात पुलिस द्वारा जनता के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार की जानकारी दी जाएगी। यह ज्ञापन जून के पहले सप्ताह में सौंपा जाएगा। कन्हैया सिंह ने स्पष्ट किया यदि निश्चित समय सीमा में इस मुद्दे का समाधान नहीं निकला तो आजसू पार्टी इससे भी व्यापक स्तर पर आंदोलन करने के लिए तैयार है। उन्होंने बताया द्वितीय चरण के आंदोलन की शुरुआत गुरुवार से किया जायेगा।

टीएसएफ के प्रशिक्षक मोहन रावत ने फतह किया माउंट एवरेस्ट

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन के वरिष्ठ प्रशिक्षक मोहन रावत ने पर्वतारोहण की दुनिया में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज करते हुए 18 मई 2025 को नेपाल समथानुसार सुबह 5:20 बजे माउंट एवरेस्ट (29,032 फीट) की चोटी पर सफलतापूर्वक तिरंगा फहराया। यह टीएसएफ की लंबी और गौरवशाली पर्वतारोहण परंपरा में 13वीं बार है जब संस्था के मार्गदर्शन में किसी पर्वतारोही ने एवरेस्ट को फतह किया है। मोहन रावत 10 अप्रैल को भारत से अपनी यात्रा शुरू की। काठमांडू में परमिट की प्रक्रिया में विलंब के बावजूद, उन्होंने 3 मई को एवरेस्ट बेस कैंप (17,500 फीट) पहुंचने में सफलता पायी। 2 मई को माउंट लोबुचे ईस्ट (20,075 फीट) की चढ़ाई कर उन्होंने खुद को ऊंचाई के अनुकूल बनाया। 8 मई से सप्तिट रोटेशन शुरू हुआ और वे कैंप 1, कैंप 2 और कैंप 3 तक पहुंचे। इसके बाद 11 मई को बेस कैंप लौटकर अंतिम तैयारी की। 14 मई की रात सप्तिट पुश की शुरुआत हुई, जिसमें उन्होंने खतरनाक खुम्बू आइसफॉल को पार करते हुए 16 मई को कैंप 3 और 17 मई को साइथ कोल (26,400 फीट) स्थित कैंप 4 तक सफलता से चढ़ाई की। अंततः 18 मई को उन्होंने एवरेस्ट शिखर पर पहुंचकर देश का गौरव बढ़ाया। इस अभियान में उनके साथ अनुभवी शेर्पा गाइड लाखा शेर्पा थे। नेपाल की प्रतिष्ठित आउटफिटिंग संस्था एशियन ट्रैकिंग का सहयोग प्राप्त हुआ। टीएसएफ के चेयरमैन और टाटा स्टील के वाइस प्रेसिडेंट (कॉर्पोरेट सर्विसेज) डीबी सुंदरा रामम ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा मोहन रावत की यह चढ़ाई न केवल साहस और प्रतिबद्धता की मिसाल है, बल्कि यह संस्था के मूल्यों और प्रशिक्षण प्रणाली की सफलता का भी परिचायक है। उत्तरकाशी जैसे छोटे गांव से निकलकर एवरेस्ट तक पहुंचना, युवाओं के लिए एक प्रेरणादायक कहानी है।



मेराल में वज्रपात से तीन लोगों की मौत, पांच घायल

वज्रपात में विधायक प्रतिनिधि डॉ लालमोहन के एकलौते पुत्र सहित तीन की मौत एक बैल की भी हुई मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल । थाना क्षेत्र में सोमवार को शाम पांच बजे अचानक आई तेज आंधी, तूफान और हल्की बारिश के बीच हुई वज्रपात से मैट्रिक छात्र 18 वर्षीय तरुण देव सहित तीन लोगों की मौत हो गयी, जबकि पांच व्यक्ति घायल हो गये। प्रखंड मुख्यालय के पूर्वारा टोला निवासी विधायक प्रतिनिधि डॉ लालमोहन का एकलौता पुत्र तरुण कुमार देव 18 वर्ष, लखैया गांव के शंभू बैठा उम्र करीब 65 वर्ष तथा रेजो गांव के धर्मेन्द्र राम उम्र 35 की मौत हो गयी। परिवार वालों द्वारा तीनों को आनन फानन में मेराल सीएचसी लाया गया, जहां डॉ दीपक कुमार सिन्हा ने चिकित्सकीय परीक्षण के बाद मृत घोषित कर दिया।



जानकारी के अनुसार तरुण कुमार देव गढ़वा के आरके पब्लिक स्कूल से मैट्रिक के परीक्षा पास किया था। वह आज अपनी मां के साथ खेत में भूसा लेने गया था तभी तेज तूफान और बारिश से बचने के लिए वह महुआ पेड़ के नीचे गया इसी दौरान वह वज्रपात की चपेट में आ गया। लखैया गांव में शंभू बैठा, धर्मेन्द्र राम और रमुना के टंडवा गांव निवासी दिलीप कुमार तीनों शंभू के घर पर एम्बेस्टस सीट चढ़ा रहे थे। आंधी तूफान एवं वर्षा से बचने के लिए तीनों लोग छत से नीचे उतरे लेकिन बगल में ही पेड़ पर वज्रपात हुआ

और धर्मेन्द्र और शंभू बैठा की मौत हो गयी। जबकि घायल दिलीप कुमार का इलाज किया जा रहा है, चिकित्सकों के अनुसार वह खतरे से बाहर है।

दुर्घटना की जानकारी मिलने के बाद अंचल अधिकारी यशवंत नायक, प्रखंड विकास पदाधिकारी सतीश भगत, थाना प्रभारी विष्णु कांत ने तुरंत अस्पताल पहुंचकर घटना से प्रभावित लोगों को हर संभव मदद पहुंचाने का प्रयास किया। अंचल अधिकारी यशवंत नायक ने कहा कि वज्रपात की घटना में तीनों मृतक के परिजनों को आपदा प्रबंधन मद से सरकारी

प्रावधान के अनुसार सभी तरह का सहयोग उपलब्ध कराया जायेगा। वहीं दुर्घटना की जानकारी मिलने के बाद विधायक प्रतिनिधि रिकु तिवारी, संजय भगत, प्रखंड प्रमुख दीपमाला कुमारी, विकास सिंह कुशवाहा, मुखिया राम सागर महतो, विकास दुबे, मनोज जायसवाल, विजय शाह, रूपू महतो, सुपमा कुशवाहा सहित बड़ी संख्या में लोगों ने अस्पताल पहुंचकर लोगों को सहयोग किया तथा शोक संतप्त लोगों को ढाँढस। वहीं मेराल में तीन अन्य वज्रपात की घटना में अरंगी गांव में चिंता देवी पति लखन विंद तथा मिनी कंस्ट्रक्शन चिनिचा रोड में काम कर रहे तीन मजदूर भी घायल हो गये। इन घायलों में बेबी देवी, राजमती देवी, अरविंद कुमार का नाम शामिल है। सभी घायलों का इलाज गढ़वा सरर अस्पताल में किया जा रहा है। जबकि राजबली घटना में तीनों मृतक के परिजनों के बैल की मौत हो गयी।

जिलास्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का समापन



आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिला एथलेटिक्स संघ के तत्वावधान में जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन 17 और 18 मई को रामासाहू स्कूल के मैदान में संपन्न हुआ। जिसमें 17 को अंडर 14 एवम अंडर 16 आयु वर्ग के बालक / बालिका खिलाड़ियों का प्रतियोगिता संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में जिला के विभिन्न प्रखंडों से लगभग 130 बालक / बालिका खिलाड़ी भाग लिये। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों का चयन किया गया है जो आगामी जून महीने में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय इंटर डिस्ट्रिक्ट एथलेटिक्स प्रतियोगिता में गढ़वा जिला का प्रतिनिधित्व करेंगे। जिनका चयन किया गया है, उनका नाम निम्न प्रकार है :

ट्रायथलॉन अ बालक वर्ग में रुद्र

प्रताप खाखा ट्रायथलॉन इ में विवेक कुमार ठाकुर ट्रायथलॉन उ में सितार्थ कुमार इसी प्रकार बालिका वर्ग में ट्रायथलान अ में सोनाक्षी सिंह ट्रायथलान इ में रंजनी कुमारी ट्रायथलॉन उ में चांदनी कुमारी।

प्रतियोगिता के अवसर पर संघ के सचिव ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए राज्य और राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बेहतर से बेहतर करने की शुभकामनाएं दी। राज्य और राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिता में बेहतर करने वाले खिलाड़ियों को जिला एथलेटिक्स संघ सम्मानित करेगा। इस अवसर पर सुशील कुमार तिवारी, कोषाध्यक्ष अजय कांत, कोशलेश तिवारी, प्रदीप सिंह, रमेश सिंह, नीलकंठ सिंह, संतोष मोयं, रमाशंकर सिंह, अतुल मिश्रा, अभिषेक, आर्जुन सिंघीकी, राजेंद्र कुजूर, लक्ष्मण आदि उपस्थित थे।

प्रांतीय खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र रवाना



आजाद सिपाही संवाददाता

भवनाथपुर। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर भवनाथपुर टाउनशिप के भैया बहन 36वें प्रांतीय खेल-कूद समारोह (कबड्डी और खो-खो प्रतियोगिता) में भाग लेने के लिए सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कुम्हारटोली, हजारीबाग रवाना हुए। यह प्रतियोगिता 20 मई से 22 मई 2025 तक आयोजित की जायेगी। प्रतियोगिता में विद्यालय की टीम से कुल 9 भैया प्रतिभाग कर रहे हैं, जिनका नेतृत्व संरक्षक आचार्य मनोज कुमार करेंगे। साथ ही निर्णायक की भूमिका में आचार्य

अजय सिंह भी टीम के साथ मौजूद रहेंगे। ये सभी खिलाड़ी कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेंगे और विद्यालय का गौरव बढ़ाने के उद्देश्य से पूर्ण उत्साह एवं जोश के साथ रवाना हुए हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य शिव बालक प्रसाद ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह अवसर न केवल खेल प्रतिभा दिखाने का है, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास एवं सहयोग की भावना को भी सुदृढ़ करता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को 'विजयी भव' का आशीर्वाद देकर विदा किया।

उपायुक्त ने की बलियारी पंचायत के मुखिया को निलंबित करने की अनुशंसा, पंचायत सचिव पर आरोप पत्र गठित

उपायुक्त ने 15वें वित्त की राशि में वित्तीय अनियमितता का आरोप जांचोपरांत सही पाया

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल। उपायुक्त शेखर जमुआर ने कांडी प्रखंड के बलियारी पंचायत की मुखिया चंदा देवी को निलंबित करने की अनुशंसा पंचायती राज विभाग से की है। उनके विरुद्ध 15वें वित्त आयोग अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में वित्तीय अनियमितता बरतते हुए सरकारी राशि के दुरुपयोग करने की आरोप है। मुखिया चंदा देवी की वित्तीय शक्ति भी जन्त करने की कार्रवाई की गयी है।

अनुमंडल पदाधिकारी गढ़वा द्वारा जांचोपरांत तीन वर्ष पूर्व बने नाली की मरम्मत कार्य में अनियमितता बरते जाने की बात



सामने आयी है। वहीं डस्टबीन खरीद में 40 डस्टबीन का पैसा निकासी किया गया, जबकि स्थल पर मात्र 25 डस्टबीन ही पाया गया। डस्टबीन खरीदने में 1 लाख 50 हजार रुपए की फर्जी निकासी की बात भी सामने आयी। इसके अतिरिक्त पंचायत में मात्र 15 सिमेटेड कुर्सी क्रय कर 25 सिमेटेड कुर्सी का बिल बनाकर 2

लाख रुपये का फर्जी निकासी किया गया। वहीं 20 चापानल मरम्मत के नाम पर 2 लाख रुपए की निकासी किया गया, जबकि जांच के क्रम में ज्ञात हुआ कि एक भी चापानल की मरम्मत हुई ही नहीं है। साथ ही जलमीनार मरम्मत के नाम पर भी 2 लाख की निकासी कर ली गयी है और एक भी जलमीनार की मरम्मत नहीं कराया गया। इस प्रकार अनुमंडल पदाधिकारी, गढ़वा की अध्यक्षता में गठित जांच दल द्वारा 15वें वित्त की राशि का दुरुपयोग करने के कारण बलियारी पंचायत की मुखिया चंदा देवी एवं पंचायत सचिव राजेंद्र राम से स्पष्टीकरण की मांग की गयी, जिनका जवाब असंतोषजनक पाया गया। मुखिया के वित्तीय शक्ति जन्त करने के साथ ही दोषी पंचायत सचिव

राजेंद्र राम के विरुद्ध आरोप-पत्र गठित करते हुए विभागीय कार्रवाई का संचालन करने का भी आदेश दिया गया।

उपायुक्त शेखर जमुआर ने बताया कि 15वें वित्त सहित पंचायत में जो भी सरकारी राशि का खर्च हो रहा है, उसमें वित्तीय अनियमितता पाये जाने पर दोषियों के विरुद्ध जिला प्रशासन द्वारा लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है। पंचायत में खर्च हो रहे राशि पर विशेष ध्यान रखें ताकि जनहित की योजना में खर्च होनेवाली राशि का किसी भी परिस्थिति में गलत इस्तेमाल न होने पाये। सरकारी राशि में किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा एवं दोषियों के विरुद्ध कड़ी-से-कड़ी कार्रवाई की जायेगी।

जीएन कॉन्वेंट स्कूल में चार दिवसीय निःशुल्क समर कैंप शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। स्थानीय जीएन कॉन्वेंट स्कूल में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान समर कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को विविध सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। अपने संबोधन में विद्यालय के निदेशक मदन केशरी ने कहा की समर कैंप एक स्वतंत्र अनुभव है। जो बच्चों के चरित्र और जीवन को आकर देता है - एक



नियंत्रित और सुरक्षित वातावरण जहां बच्चे सरल चीजों के बारे में

अपने स्वयं के निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। समर कैंप में बच्चे

अपने बौद्धिक विषयों से दूर होकर स्वतंत्र रूप से खेल-खेल की पद्धति में पढ़ाई का आनंद लेते हैं साथ ही मनोरंजन भी करते हैं। समर कैंप बच्चों को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए अभ्यास करने का मौका देते हैं। वे एक ऐसी जगह का अनुभव करते हैं जो सुखद यादें बनाने और आत्म अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन की गयी है। जो बच्चे समर कैंप में भाग लेते हैं उनकी

शारीरिक फिटनेस के साथ सोशल स्किल भी अच्छी हो जाती है। इस दौरान समस्त कार्यक्रम को सफल बनाने में उपप्राचार्य बसंत ठाकुर, शिक्षक खुशींद आलम, मुकेश भारती, विरेंद्र शाह, विकास कुमार, कृष्ण कुमार, ऋषभ श्रीवास्तव, नीरा शर्मा, सरिता दुबे, नीलम कुमारी, सुनीता कुमारी, पूजा प्रकाश, रागनी, शिवानी , संतोष प्रसाद आदि की भूमिका सराहनीय रही।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें

www.azadsipahi.com

आरके पब्लिक स्कूल मझिआंव का दसवां वार्षिकोत्सव मनाया गया

अच्छी शिक्षा और संस्कार ही व्यक्ति के जीवन को दिशा देता है : अलखनाथ

मेधावी छात्रों को भी किया गया सम्मानित

ग्रामीण बच्चों के भविष्य सवारने में अहम भूमिका निभा रहा है आरके पब्लिक स्कूल : एसडीएम



लगन, निरंतर मेहनत और उचित मार्गदर्शन हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। उन्होंने विद्यालय में उपलब्ध स्मार्ट क्लास, अनुशासित शैक्षणिक वातावरण, अनुभवी शिक्षकगण और प्रशासनिक प्रतिबद्धता को ग्रामीण शिक्षा के लिए एक आदर्श मॉडल बताया।

स्कूल के निदेशक अलखनाथ पांडेय ने कहा कि विद्यालय की स्थापना के समय से ही अनुशासन, गुणवत्ता और संस्कारयुक्त शिक्षा हमारी प्राथमिकता रही है। आज स्कूल के छात्र-छात्राएं देश-विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित क्षेत्रों जैसे कि आईपीएस, आईएएस, मेडिकल,

इंजीनियरिंग, सेना और शिक्षा में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि अच्छी शिक्षा और संस्कार ही व्यक्ति के जीवन को दिशा देते हैं। समाज को शिक्षित और संस्कारित बनाना हम सभी की जिम्मेदारी है, और आरके पब्लिक स्कूल इस दिशा में प्रेरणादायक कार्य कर रहा है।

मुख्य आकर्षण रहा मेधावी छात्रों का सम्मान : सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 2024-25 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों प्रीति कुमारी, बादल कुमार एवं आकर्षि प्रिया को एसडीओ श्री संजय पाण्डेय द्वारा मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन

खेल को बनार्यें अपना जुनून:अलखनाथ

गढ़वा (आजाद सिपाही)। गढ़वा जिला टेबल टेनिस संघ के तत्वाधान में वन विभाग के सामुदायिक भवन में दस दिवसीय समर कैंप का उद्घाटन संघ के संरक्षक अलखनाथ पांडेय, अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी, उपाध्यक्ष नंदकुमार गुप्ता, सचिव आनंद सिन्हा, मुजीबउद्दीन खान संघ के कोषाध्यक्ष कमलेश कुमार दुबे पंकज सोनी और मनोज कुमार पाठक ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर संरक्षक अलखनाथ पांडेय ने कहा कि टेबल टेनिस खेल में जिले के लोगों ने बड़ा सपना देखा है और उस सपने को पूरा करना आप सभी खिलाड़ियों की जिम्मेवारी है। अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी ने कहा कि समर कैंप का आयोजन संघ की ओर से किया गया है। समर कैंप वह अवसर है जहां आप अपने छुट्टी का बेहतर लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने कहा कि समर कैंप के माध्यम से आपको टेबल टेनिस की तकनीकी की जानकारी दी जायेगी, जिसका आप लाभ उठाए।



करने वाले अन्य विद्यार्थियों को भी मंच पर सम्मान मिला। इस अवसर पर कृष्ण मुरारी पांडेय (वैज्ञानिक), बीएसकेडी पब्लिक स्कूल गढ़वा के निदेशक संजय सोनी, ज्ञान निकेतन पब्लिक स्कूल गढ़वा के निदेशक मदन प्रसाद केशरी, जेपीएस पब्लिक स्कूल गढ़वा के निदेशक

चंद्र भूषण सिंहा, डॉ. अजय पाण्डेय, डॉ. आलोक कुमार तिवारी, देवेन्द्र पाण्डेय (बच्चा पांडेय), बिपिन सिंह, विजयकांत चौबे, मोजुबुद्दीन खान, संतोष पांडेय, अनुप पांडेय (प्राचार्य), धीरज कुमार, एंकर- देवेन्द्र सिंह, मदन प्रसाद केशरी, जेपीएस पब्लिक स्कूल गढ़वा के निदेशक में अभिभावक उपस्थी थे।

प्रशासन की अनदेखी: शराबियों का बोलबाला

इंडई (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय के किसान उच्च विद्यालय के चबूतरा व खेल मैदान इन दिनों असामाजिक तत्वों व शराबियों का अड्डा बना हुआ है। जिससे स्कूली बच्चे व शिक्षक काफी परेशान है। विद्यालय परिसर में शाम होते ही शराब पीने वालों की जमात जमा हो जाती है। शराबी नशे की दसा में धुत्त होकर शराबी शराब की खाली बोतल को बगैर डर व भय के वहीं छोड़ देते हैं। जिससे विद्यालय के अंगल-बंगल शराब की बोतल का अंबार लगा हुआ है। वहीं खेल मैदान में शराब की बोतल को फेंक देते है। जिससे पूरे मैदान में शराब की बोतल के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। विद्यालय आने वाले छात्र-छात्राओं व रोजाना साफ-सफाई करते-करते परेशान है। ग्रामीणों ने बताया कि किसान उच्च विद्यालय का मैदान केवल एक खेल स्थल ही नहीं, बल्कि प्रखंड के लिए खेल-कूद गतिविधियों का प्रमुख केंद्र है।



कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, लघु सिंचाई प्रमंडल, कोडरमा।

शुद्धि पत्र

लघु सिंचाई प्रमंडल, कोडरमा अन्तर्गत प्रकाशित ई-निविदा सूचना संख्या- WRD/MID/KODERMA/B.D.M.M.S. L.I दिनांक -15.05.2025 जिसका PR.No.352542 (Minor Irrigation) 25-26*D है, में अंकित Tender Reference No. WRD/MID/KODERMA/B.D.M.M.S.L.I के स्थान पर Tender Reference No. WRD/MID/KODERMA/B.D. /M.M.S. L.I पढा जाय।

क्रमांक-04 पर अंकित EMD की राशि जो प्राक्कलित राशि का 2 प्रतिशत 235300.00 (दो लाख पैंतीस हजार तीन सौ) के स्थान पर 1 प्रतिशत राशि 117700.00 (एक लाख सत्राह हजार सात सौ) रूपये पढा जाय।

क्रमांक 13 Helpline Number of e-Procurement Cell 0651-2491232 शेष सभी शर्तें पूर्ववत् रहेंगी। कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमंडल, कोडरमा। PR.NO.352834 Minor Irrigation(25-26):D

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER SOIL INVESTIGATION DIVISION, ADVANCE PLANNING, ROAD CONSTRUCTION DEPARTMENT,RANCHI	
NirupanBhawan,3 rd Floor,Room No. 401,56-Set,Doranda,Ranchi-834002 e-Procurement (Very Short Tender Notice) Letter of Invitation (LOI) No.-02/2025-26 1 st Call e-Tender Ref No- RCD/SID/AP/RAN/02/2025-26 Date:- 19.05.2025	
1	Name Of Work Consultancy Services for Preparation of Detailed Project Report for widening & Strengthening/Reconstruction of Road from Chingarha main road to Bhurkunda (Sayal more) including replacement/New Proposal of Culverts, Bridges, ROB's, RTU's, Complete Land Acquisition Plan including Ownership details all complete as per latest guidelines, Resettlement and Rehabilitation Proposal, Forest Diversion Proposal and Utility Shifting Proposal in details etc. as required by the Department (If any) under Ramgarh District in the State of Jharkhand *Empasised consult with RCD under category-I vide letter No. 3063(S) WE dated 22.08.2022are allowed to Bid.
2	Tentative Length 6.35Km
3	Period of Completion of Work 30 Days
4	Cost of Tender documents Rs 5,000/- (Five Thousand) only. Non refundable Fee.Tender fee will be received through online mode only. The quotations have to deposit a fixed amount of Rs 15,000 as Earnest Money. As per the Departmental Letter no.-4652(S) dated 06.10.2023, cost of tender document and Earnest Money Deposit be received in online mode only through e-procurement (http://jharkhandtenders.gov.in) by internet banking/NEFT/RTGS facility as per Standard Operating sistin Procedure (SOP) issued by Information Technology & e-Governance Department, Government of Jharkhand vide letter no- 120 dated 03.10.2023.
5	Mode of Bid Submission e-tendering(http://jharkhandtenders.gov.in)
6	Date/Time of Publication of Tender on Website 21.05.2025,10:30 AM
7	Last Date/Time of Bid Submission 28.05.2025 12:00PM
8	Last Date/Time of Submission of Tender Fee & EMD 28.05.2025 12:00PM
9	Date and Time of Bid opening 29.05.2025 12:30 PM
10	120 days
11	Bid Submission Address Chief Engineer(Communication),Road Construction Department,1 st Floor, Engineer Hostal No.-2, Dhuwra, Ranchi-834004
12	Designation and Contact no. of Tender inviting Officer Executive Engineer, Soil Investigation Division,Advance Planning,RCD, Ranchi Mob-9905606077.
Note:-Only e-Tender shall be accepted. Sd./- (Ravi Shankar Pravakar) Executive Engineer, Soil Investigation Division, Advance Planning, Road Construction Department,Ranchi. PR 352922 Road(25-26):D	

कार्यालय, जिला शिक्षा अधीक्षक-सह-अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारी, कोडरमा

रांची-पटना रोड, समारहरणालय भवन, कोडरमा- 825410

E- mail - Koderma.mdm@gmail.com

-- आवेश्यक सूचना :-

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि सरकार के संयुक्त सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड रांची के पत्रांक 0861 दिनांक 15.05.2025 विभागीय संकल्प संख्या 2093 दिनांक 06.08.2019 यथा संशोधित अधिसूचना संख्या 1556 दिनांक 08.06.2022 एवं अधिसूचना संख्या 1522 दिनांक 14.05.2025 के क्रम में राज्य के सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक /प्रधानाध्यापक के अन्तर जिला स्थानान्तरण के लिए समय-सौमा निम्नवत् निर्धारित की गई है, जिसकी सूचना जिला के अधिकारिक वेबसाईट koderma.nic.in पर अपलोड है:-

शिक्षकों द्वारा ऑनलाईन आवेदन समर्पित करने की तिथि	दिनांक 19.05.2025 से 14.06.2025 तक
जिला शिक्षा अधीक्षक द्वारा ऑनलाईन आवेदनो का सत्यापन	दिनांक 20.06.2025 तक
जिला शिक्षा स्थापना समिति का अनुमोदन एवं राज्य स्तरीय समिति के लॉगिन पर ऑनलाईन अग्रसारण	दिनांक 21.06.2025 से 05.07.2025 तक

निदेश दिया जाता है कि निर्धारित समयावधि के अन्दर Teacher Transfer portal के माध्यम से ऑनलाईन आवेदन करना सुनिश्चित करेंगे। ऑनलाईन आवेदन का लिंक <http://teachertransfer.jharkhand.gov.in> में आवेदन करने संबंधी विस्तृत जानकारी एवं आवश्यक निदेश उपलब्ध है।

ह/—

जिला शिक्षा अधीक्षक-सह-अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी, कोडरमा

PR 352859 School Education and Literacy (25-26)_D

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, MINOR IRRIGATION DIVISION, KODERMA

Very Short e-Procurement Tender Notice, (3rd Call)
Tender Reference No:- SPUF/MID/KODERMA/F2-04/2025-26
Letter no:- 403
Details of Works:-
Date:- 19.05.2025

Sl. No.	Name of Block	Scheme Name	Estimated Cost (In Lakh)	Time of Completion
1.	Jainagar	Construction of P.C.C Road from Panchayat-Naitand to Village-Katahi Under Jainagar Block	24.954	03 Months
1.	Date of Publication of e-Tender on Website		21.05.2025 at 11:00 A.M	
2.	Last date/Time for Submission of e-Tender bids Online		26.05.2025 up to 5:00 P.M	
3.	Last Date for Online-e Submission of Tender Fee and EMD		26.05.2025 up to 5:00 P.M	
4.	Date of opening of e-Tender		28.05.2025 at 3:00 P.M	
5.	Name & address of office inviting tender		Executive Engineer, Minor Irrigation Division, Koderma	
6.	Contact no. of e-Procurement officer		9939193214	
7.	E-mail of e-Procurement office		cemidkod-cemr-jhr@nic.in	

Note:- 1) Only e-Tender will be accepted.
2) Published Estimated Cost May be Increased or Decreased.
3) Mode of Submission of Online Tender/Tender Fee/EMD Through <http://jharkhandtenders.gov.in>
Executive Engineer,
Minor Irrigation Division, Koderma.
PR 352836 Minor Irrigation(25-26)#D

सुरेश पासवान ने 12 तालाबों के निर्माण का किया शिलान्यास

राहुल गांधी का बात अब लोग समझ रहे हैं : बादल: पूर्व मंत्री बादल पत्रलेख ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे के आह्वान पर वह रेली आयोजित की जा रही है। उन्होंने कहा की अब लोगों को समझ आ रहा है कि राहुल गांधी जो नेतावनी दे रहे थे। वह सच हो रहा है। बिहार में उनके दौरे से एनडीए सरकार घबरा गयी है। आज पूरा देश इंदिरा गांधी को याद कर रहा है और राहुल गांधी पर भरोसा जता रहा है।



देवघर। देवघर विधायक सुरेश पासवान ने सोमवार को नगर निगम कार्यालयों में शहर में बनने वाले 12 तालाबों के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस अवसर पर विधायक सुरेश पासवान ने कहा कि हेमंत सोरेन की सरकार ने विकास का जो संकल्प लिया है, वह अब धीरे-धीरे पूरा हो रहा है। चाहे ग्रामीण इलाका हो या शहरी इलाके, जहां भी विकास हो, सब कुछ सुदृढ़ तरीके से हो। चुनाव के समय

जो वादा जनता से किया गया था, उसे अब पूरा करने जा रहे हैं।' उक्त योजना में गुणवत्ता पूर्ण कार्य हो, ताकि राज्य सरकार का नाम हो, नगर आयुक्त रोहित कुमार सिन्हा शिलान्यास कार्यक्रम लंबे समय से पेंडिंग था, हमलोगों का प्रयास था कि स्थानीय विधायक उक्त योजनाओं का शिलान्यास करे संवेदकों को निर्देश दिया गया कि काम को गुणवत्ता ऐसी हो, जिससे लोगों को अधिक से अधिक उत्प्रेषण योजनाओं का लाभ मिल सके।

22 को पीएम करेंगे शंकरपुर रेलवे स्टेशन का ऑनलाइन उद्घाटन



कार्यकर्ता भी अन्य दलों को छोड़कर झामुमो की सदस्यता लेगी। इस अवसर पर कई प्रमुख नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे, जिनमें जिला उपाध्यक्ष तेजनारायण वर्मा, महानगर अध्यक्ष प्रदीप कुमार चौधरी, युवा नेता राहुल चंद्रवंशी, महानगर सचिव मुरलुयन राउत, महिला नेत्री रजनी सिन्हा, हीरासा देवी, काजल कुमारी, अंशुमाला, मंजु दास, बैलिया देवी, सावित्री देवी, हांसदा, विद्या राठी, वैभव चंद्रवंशी एवं अनिश कुमार आदि शामिल थे।

देवबर। जसीडीह-मधुपुर रेलखंड पर स्थित शंकरपुर रेलवे स्टेशन का अमृत भारती योजना के तहत कायाकल्प हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 मई को इसका ऑनलाइन उद्घाटन करेंगे। इसकी तैयारी को लेकर आसनसोल डीआरएफ चेतनानंद सिंह शंकरपुर स्टेशन का निरीक्षण किया। अमृत भारत प्रोजेक्ट के तहत शंकरपुर स्टेशन के विकास पर कुल 15 करोड़ रुपये खर्च किये गये हैं।

देवघर एम्स का नजदीकी रेलवे स्टेशन के तौर पर इस शंकरपुरी हॉल्ट को स्टेजिंग के रूप में विकसित किया गया है। शंकरपुरी स्टेजिंग का पूरी तरह से कायाकल्प किया गया है। यात्रियों की सुविधा बढ़ा दी गयी है। स्टेजिंग में यात्री शौच, रेलवे टाइम टेबल के लिए लाइटड लाइनेज, साइनेज, सुविधायुक्त प्लेटफार्म, अंडर पास, अवाधुनिक टिकट कंटर और वेल्थिंग हॉल, पार्किंग, अंडर और बाहर लाइट लगायी गयी है।



MEENA GENERAL HOSPITAL
(A Unit of Meena Hospital Pvt.Ltd.)

SPECIALTIES

- Anesthesiology.
- Critical Care.
- Dental.
- Internal Medicine.
- Lab & Radiology.
- Obstetrics & Gynecology
- Ophthalmology
- Pediatrics & Neonatology.
- Urology.
- General Surgery.
- Orthopedics & Trauma.
- Physiotherapy.



Ambulance Facilities



Ghujadih, G.T.Road, Near Kulgo Toll Plaza,
P.s.- Dumri, Giridih, (Jh.)



8969984705

100% आयुर्वेदिक

100% इलाज

आयुर्वेदिक अपनाएँ

खुशहाल जीवन पाएँ ।







शुगर / बी.पी. या थायरॉइड / जोड़ों में दर्द / खुनी बवासीर / खोंसी / दम्ला / सांस का श्वेत/ट.व. / मोटापा का 100% इलाज / लकवा सांद्रिका / पथरी का 100% इलाज / दाद / खाज / खुजली / बालों का झड़ना सभी प्रकार का इलाज किया जाता है ।

यहाँ मशीन के द्वारा भी चेकअप किया जाता है ।

जोड़ों का दर्द में 24 से घंटे

में रिजल्ट देखें 100%



7296007167

NH.33 अनान्दी, ओरमोड़ी, रांची, झारखण्ड



HEALMAX HOSPITAL

Healing To The Maximum

Visit Now

3rd Floor, Chhat Talab Road, Govindpur, Dhanbad - 828109
(Opposite Police Station, National Highway 2)

EXPERIENCE

Happy Riding

मात्र
₹ 38,000/-
 On Road



- बैटरी स्कूटी
- कम लागत
- कम रखरखाव
- लाइसेंस मुक्त
- एक साल की वारंटी
- 60 किलोमीटर रेंज



**BAJAJ
FINANCE**

CONTACT FOR DEALERSHIP

J.K SALES

Pillar No. 83, In Between O.T.C. Ground & Piska More
 Ratu Road, Beside M-Bazar, Lakdi Tall, Ranchi

M.- 9386070011

आजाद सपाही की ओर से स्वतंत्राधिकारी लैटैडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, गंजी 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललमुटा, पुलिस स्टेशन, रातू, गंजी से मुद्रित
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार, *******पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। सम्पत्ति दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवारों के लिए क्षेत्राधिकार गंजी न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109, Postal Registration No. RN/249/2019-21

